सब कर्म बन्धनकारक सिद्ध होंगे, क्योंकि शुभ-अशुभ दोनों ही प्रकार के कर्मों का अपना-अपना फल होता है, जो कर्ता के लिए बन्धनकारी है। अतः श्रीकृष्ण (विष्णु) की प्रीति के लिए कृष्णभावनाभावित कर्म ही करे। इस कोटि के कर्म करने वाला जीवन्मुक्त हो जाता है। यही महान् कर्म-कौशल है। प्रारम्भिक अवस्था में इस पद्धति के लिए अतिशय कुशल परामर्श अपेक्षित रहता है। इसलिए कृष्णभक्त अथवा जिनके आश्रय में अर्जुन को कर्म करने का सुअवसर प्राप्त हुआ—उन भगवान् श्रीकृष्ण के प्रत्यक्ष आदेश के अनुसार सोत्साह कर्म करे। इन्द्रियतृप्ति के लिए कोई भी क्रिया न करे, सब कर्म श्रीकृष्ण के प्रीत्यर्थ ही हों। इस अभ्यास के द्वारा कर्मबन्धन से मुक्ति ही नहीं होगी; वरन् उस भगवद्भक्ति की प्राप्ति भी होगी, जो भगवद्धाम में प्रवेश करने का ऐकान्तिक पथ है।

5/3

सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः।
अनेन प्रसविष्यध्वमेष वोऽस्त्विष्टकामधुक्।।१०।।

सहयज्ञाः=यज्ञसहित; **प्रजाः**=प्रजा को; **सृष्ट्वा**=रचकर; **पुरा**=प्राचीन काल में; **उवाच**=कहा; **प्रजापतिः**=प्राणियों के स्वामी ने; **अनेन**=इससे; **प्रसविष्यध्वम्**=समृद्धि प्राप्त करो; **एषः**=यह यज्ञ; **वः**=तुम्हें; **अस्तु**=हो; **इष्ट**=वाञ्छित; **कामधुक्**=कामनाओं को देने वाला।

अनुवाद

सृष्टि के आदि में प्रजापति ने श्रीविष्णु के लिए लक्ष्य वाले यज्ञ के साथ मनुष्यों और देवताओं को रचकर उन्हें यह आशीर्वाद दिया, 'इस यज्ञ द्वारा सुखोपभोग करो; इसके करने से तुम्हें सब वाँछित पदार्थों की प्राप्ति होगी'।।१०।।

तात्पर्य

प्रजापति (विष्णु) ने इस प्राकृत सृष्टि की रचना करके बद्धजीवों को अपने यथार्थ घर—भगवद्धाम को लौटने का सुअवसर प्रदान किया है। भगवान् श्रीकृष्ण से अपने सम्बन्ध को भुला देने के कारण जगत् के सब जीव माया में बँधे हुए हैं। इस शाश्वत् सम्बन्ध को जानने में हमारी सहायता करना वेदों का लक्ष्य है। जैसा गीता में कहा है, **वेदैश्च सर्वैरहमेव वेद्यः**। भगवान् की श्रीमुख वाणी है कि उन्हें जानना ही वेदों का लक्ष्य है। वैदिक मन्त्रों में कहा गया है कि **पतिं विश्वस्यात्मेश्वरम्**। अस्तु, भगवान् श्रीविष्णु प्रजापति हैं। श्रीमद्भागवत (२.४.२०) में भी श्रीशुकदेव गोस्वामी ने उन्हें नाना रूपों में 'पति' अर्थात् स्वामी कहा है—

श्रियःपतिर्यज्ञपतिः प्रजापतिर्धियां पतिर्लोकपतिर्धरापतिः।
पतिर्गतिश्चांधकवृष्णिसात्वतां प्रसीदतां मे भगवान् सतां पतिः।।

भगवान् विष्णु प्रजापति हैं; वे ही सब जीवों, सब लोकों तथा श्री के पति एवं सर्व-संरक्षक हैं। उन्होंने इस प्राकृत-जगत् की रचना इसलिए की है जिससे बद्धजीवों को उन की प्रीति के लिए यज्ञ करने की शिक्षा मिल जाय। इससे वे संसार में